विपुल धनराशि के उपार्जन में उसने अपने अग्रज राजा युधिष्ठिर की सहायता की थी। इसी भाँति बहुभोजन तथा हिडिम्बासुर वध जैसे अतिमानवीय कार्यकलाप करने वाले भीम को **वृकोदर** कहा जाता है। इस प्रकार श्रीभगवान् तथा पाण्डव दल के अन्यान्य पुरुषों द्वारा विशिष्ट शंखों का वादन स्वपक्षी सेनाओं के लिए अत्यन्त उत्साहवर्धक था। विपक्ष में इस वैशिष्ट्य का अत्यन्त अभाव था। परमेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण और श्रीदेवी लक्ष्मी भी वहाँ विराजमान नहीं। अतएव युद्ध में कौरवों की पराजय पूर्वनिश्चित है—शंखनाद ने इसी सन्देश का उद्घोष किया।

अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः।
नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ।।१६।।
काश्यश्च परमेष्वासः शिखण्डी च महारथः।
धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकिश्चापराजितः।।१७।।
द्रुपदो द्रौपदेयाश्च सर्वशः पृथिवीपते।
सौभद्रश्च महाबाहुः शंखान्दध्मुः पृथक्पृथक्।।१८।।

अनन्तविजयम्=अनन्तविजय नामक शंख; **राजा**=राजा; **कुन्तीपुत्रः**=कुन्तीपुत्र; **युधिष्ठिरः**=युधिष्ठिर ने; **नकुलः**=नकुल; **सहदेवः च**=और सहदेव ने; **सुघोषमणि-पुष्पकौ**=सुघोष तथा मणिपुष्पक नामक शंख बजाये; **काश्यः**=काशिराज; **च**=तथा; **परमेष्वासः**=महान् धनुर्धारी; **शिखण्डी**=शिखण्डी; **च**=तथा; **महारथः**=महारथी; **धृष्टद्युम्नः**=धृष्टद्युम्न; **विराटः**=विराट (अज्ञात वास के समय पाण्डवों के आश्रय-दाता; **च**=तथा; **सात्यकिः**=सात्यकि (युयुधान—श्रीकृष्ण का सारथी); **च**=तथा; **अपराजितः**=सदा विजयी; **द्रुपदः**=द्रुपद (पाञ्चाल नरेश); **द्रौपदेयाः**=द्रौपदीपुत्र; **च**=तथा; **सर्वशः**=इन सभी ने; **पृथिवीपते**=हे राजन्; **सौभद्रः च**=सुभद्रापुत्र अभिमन्यु ने भी; **महाबाहुः**=पराक्रमी; **शंखान्**=शंख; **दध्मुः**=बजाए; **पृथक्-पृथक्**=अलग-अलग।

अनुवाद

कुन्तीपुत्र राजा युधिष्ठिर ने अनन्तविजय नामक शंख बजाया और नकुल-सहदेव ने सुघोष एवं मणिपुष्पक नाम वाले शंखों का वादन किया। महान् धनुर्धारी काशी-राज, महारथी शिखण्डी, धृष्टद्युम्न, विराट, अजय सात्यकि, द्रुपद, द्रौपदी के पुत्र तथा सुभद्रापुत्र (अभिमन्यु) आदि, इन सभी ने हे राजन्! अपने-अपने शंख बजाये।।१६-१८।।

तात्पर्य

इस श्लोक में सञ्जय ने राजा धृतराष्ट्र को अतिशय पटुतापूर्वक सूचित किया है कि राज्य-सिंहासन पर अपने पुत्रों को स्थापित करने के लिए पाण्डवों से छल करने की उसकी अविवेकपूर्ण नीति अधिक श्लाघ्य नहीं थी। लक्षणों से स्पष्ट है कि उस महासंग्राम में सम्पूर्ण कुरुवंश का महाविनाश हो जायेगा। कुलवृद्ध भीष्म से लेकर